प्रेस विज्ञप्ति

इन्द्रप्रस्थ महिला महाविद्यालय, अनुवाद एवं अनुवाद अध्ययन केंद्र की पत्रिका 'कोड' के चौथे अंक का विमोचन हुआ | यह अंक 'स्वाधीनता संग्राम' पर केन्द्रित है जिसमें हिंदी-अंग्रेज़ी के अतिरिक्त देश की विभिन्न भाषाओं तेलेगु, मलयालम, बांग्ला, असमिया, उर्दू आदि की रचनाओं को स्थान मिला | उनके साथ-साथ हरयाणवी, मैथिली, गढ़वाली आदि बोलियों से और इन बोलियों में भी अनुवाद किये गए | इस अंक के लिए रचनाओं के चयन-संपादन का आधार आज़ादी के सत्तर वर्ष तथा भारत-छोड़ो आंदोलन पिचहत्तर वर्ष के उपलक्ष्य में होने वाले कार्यक्रमों की श्रृंखला की कड़ी के रूप में प्रस्तावित हुआ | यह भी एक संयोग ही था कि यह विशेष कार्यक्रम 13 अप्रैल को आयोजित हुआ जो कि जलियाँवाला बाग हत्याकांड के ऐतिहासिक दिन है जो भारतीय स्मृति में अविस्मरणीय है | पत्रिका का लोकार्पण कॉलेज की प्राचार्या डॉ. बाबली मोइत्रा सराफ, संस्कृति कर्मी डॉ. रक्षंदा जलील, कवि एवं चिंतक डॉ. सुकृता पॉल कुमार तथा प्रख्यात कवयित्री अनामिका जी के द्वारा हुआ | इस पत्रिका की छात्र संपादक हैं–आकांक्षा सहारन तथा ऋतु मेहरा |

इसी अवसर पर सआदत हसन मंटो के समय एवं लेखन पर एक परिचर्चा का भी आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता की कॉलेज की प्राचार्या डॉ. बाबली मोइत्रा सराफ ने | उन्होंने आज की ज्वलंत घटनाओं से मंटो की कहानियों को जोड़ते हुए उनकी प्रासंगिकता बताई और कहा कि मंटो की कहानियाँ हमें उस समय एवं अपने समय के भयानक यथार्थ से रू-ब-रू करवाती हैं | डॉ. रक्षंदा जलील ने बताया कि मंटो की कहानियों के सन्दर्भ में भारतीय कथा में यह पहली बार देखने को मिलता है कि एक स्त्री का शरीर किस प्रकार प्रतिशोध का मैदान बन जाता है | उन्होंने 'स्याह हाशिए' से दो लघु रचनाओं का पाठ किया जो संवेदना और अनुवाद की दृष्टि से बेजोड़ थीं | डॉ. सुकृता पॉल कुमार ने कहा कि अफ़सानानिगारी ने मंटो को बचा लिया | उन्होंने स्टोरीटेलिंग की कला का एक स्ट्रेटेजी के रूप में भी उपयोग किया है | जब वे जीवित थे तो उन्हें कोई प्रतिष्ठा नहीं मिली लेकिन मृत्यु के बाद उन्हें 'मॉडर्निस्ट' और 'प्रोग्रेसिव' जैसे खाँचों में रखकर देखा गया | वे एक ऐसे लेखक हैं जो हमेशा हमें जागरूक बनाकर रखते हैं. बाबली मोइत्रा सराफ ने परिचर्चा में यह भी जोड़ा कि आज हॉलोकास्ट डे भी है और इस अवसर पर यह कार्यक्रम प्रासंगिक भी है |

परिचर्चा के बाद 'चौकोर लकीरें' की टीम ने 'दास्तान-ए-मंटोइयत' प्रस्तुत की | इसके पहले हिस्से में मंटो के जीवन के बहुत-से रोचक पहलुओं को दास्तान के माध्यम से प्रस्तुत किया गया और दूसरे हिस्से में मंटो की प्रसिद्द कहानी 'अकल दाढ़' का नाट्य रूपांतरण प्रस्तुत किया गया | यह कार्यक्रम कॉलेज की हिंदी साहित्य सभा एवं 'पोएट्री क्लब' के सहयोग से आयोजित हुआ |

Code
Journal of Translation Vol. IV
Freedom Struggle Special
Indraprastha College for Women
University of Delhi
INDRAPRASTHA COLLEGE FOR WOMEN
UNIVERSITY OF DELHI
TRANSLATION & TRANSLATION STUDIES CENTRE
invites you to the release of
CODE VOL. IV, JOURNAL OF TRANSLATION
FREEDOM STRUGGLE SPECIAL
followed by
DASTAN-E-MANTOIYAT
Speeches: Dr. Rakhshanda Jalil | Dr. Sukrita Paul Kumar Chair: Dr. Babli Moitra Saraf
Performance by
CHAKOR LAKEEREIN
13 APRIL, 2018 11:30 AM AUDITORIUM
Supported by: Hindi Sahitya Sabha & Poetry Club
Indraprastha College for Women

Code
INDRAPRASTHA COLLEGE FOR WOMEN
TRANSLATION & TRANSLATION STUDIES CENTRE
CODE VOL. IV, JOURNAL OF TRANSLATION
FREEDOM STRUGGLE SPECIAL
DASTAN-E-MANTOIYAT

Code
Journal of Translation Vol. IV
Freedom Struggle Special
Indraprastha College for Women
University of Delhi
INDRAPRASTHA COLLEGE FOR WOMEN
UNIVERSITY OF DELHI
TRANSLATION & TRANSLATION STUDIES CENTRE
invites you to the release of
CODE VOL. IV, JOURNAL OF TRANSLATION
FREEDOM STRUGGLE SPECIAL
followed by
DASTAN-E-MANTOIYAT
Speakers: DR. RAKHSHANDA JALIL | DR. SUKRITA PAUL KUMAR Host: DR. BABLI MOITRA SARAF
Performance by
CHAKOR LAKEEREIN
13 APRIL, 2018
11:30 AM
AUDITORIUM
Supported by HINDI SAHITYA SABHA & POETRY CLUB
INDRAPRASTHA COLLEGE FOR WOMEN